कश्मीरी भक्ति काव्य और ललद्यद

डॉ. गोविन्द प्रसाद वर्मा
(सहायक आचार्य)
हिंदी विभाग, मानविकी एवं भाषा संकाय
महात्मा गाँधी केंद्रीय विश्वविद्यालय
मोतिहारी (बिहार)- 845401
Email: govindprasadverma@mgcub.ac.in

स्नातक (प्रतिष्ठा) हिंदी, छठा सेमेस्टर
प्रश्नपत्र: भारतीय भक्ति साहित्य (HIND3025)

विषय-सूची

- कश्मीरी भक्ति काव्य का सामान्य परिचय
- ललद्यद : जीवन परिचय एवं रचनाएँ
- दार्शनिक आधार
- संवेदना और अनुभूति
- सामाजिक-सांस्कृतिक चित्रण
- शिल्प पक्ष
- निष्कर्ष
- संदर्भ-ग्रंथ-सूची

❖ कश्मीरी भक्ति काव्य का सामान्य परिचय

- कश्मीरी भक्ति काव्य उत्तरांचल भक्ति साहित्य के अंतर्गत आता है |
- कश्मीरी में भक्ति साहित्य चौदहवीं शताब्दी से आरंभ होकर उन्नीसवीं शताब्दी तक अर्थात् ललद्यद से परमानंद तक विकसित हुआ है |
- कश्मीरी में भक्ति साहित्य का विकास दो चरणों में संपन्न हुआ है |
- पहले चरण में कश्मीरी शैव दर्शन और सूफी रहस्यवाद की आधारभूमि पर विकसित आध्यात्मिक और सांस्कृतिक चेतना संपन्न कविता है | इस उत्थान के प्रतिनिधि रचनाकार ललद्यद और शेखनुरुद्दीन (नंद ऋषि) हैं |

- दूसरे चरण में वैष्णव अवतारवाद एवं लीलागान की भावभूमि पर विकसित कविता है | इस चरण के प्रतिनिधि रचनाकार परमानंद, साहिब कौल आदि माने जाते हैं |
- कश्मीर में भक्ति काव्य ललद्यद के बाखों (वाक्य) से शुरू होता है | उस समय कश्मीरी एक लोकभाषा थी |
- इससे पहले कश्मीर में संस्कृत भाषा में साहित्य रचा जाता था |
- ललद्यद के पश्चात् 14 वीं शताब्दी उत्तरार्ध में संत कवि शेखनुरुद्दीन आते हैं |
- इन्होंने आचरण की शुद्धता और सात्विकता के द्वारा हिंदू और मुसलमानों में पारस्परिक सद्भावना पैदा की |

- इनके उपरांत माता रूप भवानी ने संस्कृतनिष्ठ कश्मीरी भाषा में परमसत्ता के प्रति आध्यात्मिक रहस्यवाद से संपृक्त कविताएँ रचीं |
- प्रथम उत्थान के अंतिम कवि के रूप में साहिब कौल (जन्म चरित और कृष्णावतार चरित) आते हैं |
- कश्मीरी भक्ति काव्य में द्वितीय उत्थान का उन्मेष वस्तुतः 18 वीं शताब्दी से होता है | इसे पुनरुत्थान युग के रूप में भी देखा जाता है |
- इस युग का कश्मीरी भक्ति काव्य एक तरफ सूफी रहस्यवाद की पराकाष्ठा पर था,तो दूसरी तरफ उत्तर भारत के वैष्णव भक्ति आंदोलन से भी ओतप्रोत था |
- इसी आधारभूमि पर 19 वीं शताब्दी में भक्ति भावना को प्रकाश राम गुरमानी, परमानंद (रामावतार) और कृष्ण जुराज दान समृद्ध कर रहे थे |

❖ ललद्यद* : जीवन परिचय एवं रचनाएँ

- ललद्यद कश्मीर की आदि कवयित्री मानी जाती है |
- ललद्यद का अनुमानत: समय सन् 1318 ई. से 1381 ई. के बीच माना जाता है |
- इनके जनता के बीच में अनेक नाम प्रचलित हैं – ललद्यद, लल्लेश्वरी, ललभज,लल्लयोगेश्वरी, लल्ला, लल्लारिफा आदि |
- ललद्यद का जन्म श्रीनगर के निकट एक ब्राह्मण परिवार में हुआ |
- पाम्पुर में इनकी ससुराल थी | इनका वैवाहिक जीवन कष्टमय था |

- उन्होंने परिवार को त्याग दिया तथा सामाजिक कुरीतियों का भी विरोध किया |
- श्री कंठ से लल्लेश्वरी ने शैवाद्वैत की दीक्षा ली |
- लल्लेश्वरी का व्यक्तित्व अत्यंत सौम्य, सहिष्णु और गंभीर था | परंतु, वह स्वभाव से विद्रोहिणी थी |
- ललद्यद ने मुख्यत: बाख छंद में रचनाएँ कीं |
- उनकी रचनाएँ मौखिक परंपरा से प्राप्त होती है तथा लोकगीतों की परंपरा के निकट मानी जाती हैं |

❖ दार्शनिक आधार

- ललद्यद के साहित्य का वैचारिक आधार शैव दर्शन है |
- उन्होंने शैव दर्शन के त्रिक दर्शन (शिव, भक्ति और नर)रूप को आत्मसात किया |
- उन पर वेदांत और सूफी दर्शन का भी प्रभाव दिखाई पड़ता है |
- वे विश्व चेतना को आत्मचेतना में तिरोहित मानती हैं |
- उनका मानना है कि सूक्ष्म अंतर्दृष्टि से परम चेतना का आभास संभव है |
- ललद्यद समस्त मानव परंपरा को एक निरंतर अविछिन्न प्रवाह के रूप में देखती हैं |

- जनम–मरण के अनवरत क्रम में मनुष्य के साथ स्वयं शिव को भी गुजरना पड़ता है |
- वे कहती हैं –

हम ही थे, होंगे भी हम ही

औ' विगत युगों से चले आ रहे हैं हम भी

शिव का जीना-मरना होगा न समाप्त कभी

आना-जाना सूरज का बना रहेगा ही |

❖ संवेदना और अनुभूति

- लल्लेश्वरी में विचार, अनुभूति, और भाव परस्पर अनुस्यूत होकर अभिव्यक्त होते हैं।
- उनके 'बाख' पाठकों को सहृदय बनाते हैं और उनके मन में जीवन्तता को स्पंदित करते हैं।
- वे रहस्यानुभूति के माध्यम से लोकोत्तर प्रेमी (शिव) की खोज, प्राप्ति का संकल्प, उसके प्रति समर्पण और अभेद भावना को व्यक्त करती हैं।
- वे माया से संबद्ध पुरुष को भी स्त्री के रूप में देखती हैं।

- ललद्यद आत्मा और परमात्मा, व्यष्टि चेतना एवं समष्टि चेतना के बीच प्रेम की विभिन्न छवियों को प्रस्तुत करती हैं |
- वे अपने एक 'बाख' में कहती हैं –

  सखी री, मैं तो खोज थकी घर प्रिय का
  झेल हजारों कष्ट अंत में मिली कंत की नगरी
  -
  बैठ गयी मैं द्वार पिया के नेह जताने हिय का |

- वे कहती हैं – गुरु ने मुझे एक रहस्य की बात बताई बाहर से मुख मोड़ और अपने अंतर को खोज |

❖ सामाजिक-सांस्कृतिक चित्रण

- ललद्यद की दृष्टि धार्मिक बाह्याचारों और आडंबरों, सामाजिक विषमताओं और अन्याय पर भी थी |
- वे मूर्ति पूजा, तीर्थाटन, कोरे पुस्तकीय ज्ञान और जीव बलि आदि का विरोध करती हैं –

  पोथी पर पोथी रटते / रहते कोरे के कोरे !

  ये पंडित, ये अविचारी, इससे ज्ञान न बढ़ता |

- उन्होंने अपने युग की सांस्कृतिक – नैतिक संस्कार की व्याख्या की है |

❖ शिल्प पक्ष

- ललद्यद के बाखों की भाषा कश्मीरी है | संस्कृतनिष्ठ दार्शनिक शब्दावली का भी प्रयोग हुआ है |
- वे बिंब विधान, प्रतीक योजना और उपमानों का सहज ही प्रयोग करती है |
- उनकी काव्य भाषा में अद्भूत किस्म की ध्वन्यात्मकता है |
- वे कश्मीरी भाषा का अत्यंत लोकप्रिय छंद 'बाख' का प्रयोग करती है, कहीं-कहीं 'वचन' काव्य-रूप भी मिलता है |

❖ निष्कर्ष

- कश्मीरी में भक्ति साहित्य चौदहवीं शताब्दी से आरंभ होकर उन्नीसवीं शताब्दी तक अर्थात् ललद्यद से परमानंद तक विकसित हुआ |
- पहले चरण में कश्मीरी शैव दर्शन और सूफी रहस्यवाद की आधारभूमि पर विकसित आध्यात्मिक और सांस्कृतिक चेतना संपन्न कविता है | दूसरे चरण में वैष्णव अवतारवाद एवं लीलागान की भावभूमि पर विकसित कविता है |
- ललद्यद कश्मीर की आदि कवयित्री मानी जाती है |
- ललद्यद के साहित्य का वैचारिक आधार शैव दर्शन है |
- वे रहस्यानुभूति के माध्यम से लोकोत्तर प्रेमी (शिव) की खोज, प्राप्ति का संकल्प, उसके प्रति समर्पण और अभेद भावना को व्यक्त करती हैं |
- ललद्यद के बाखों की भाषा कश्मीरी है | वे बिंब विधान, प्रतीक योजना और उपमानों का सहज ही प्रयोग करती है |

❖ संदर्भ-ग्रंथ–सूची

- कश्मीरी भाषा और साहित्य : शिबन कृष्ण रैणा, सन्मार्ग प्रकाशन, दिल्ली
- कश्मीरी साहित्य का इतिहास : शशि शेखर तोषखानी, जे. एंड के. अकादमी ऑफ़ आर्ट, कल्चर एंड लैंग्वेजिज, जम्मू
- ललद्यद : जयालाल कौल, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली
- हिंदी और कश्मीरी के संत काव्य का तुलनात्मक अध्ययन : कृष्णा रैणा, शारदा प्रकाशन, नई दिल्ली
- www. egyankosh.ac.in
- https://youtu.be/Stft3kaTz2c (* इस लिंक से ललद्यद के 'बाख' और उनके चिंतन से परिचित हो सकेंगे |)

धन्यवाद !